© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

पुराणों में निरुपित भूगोल, पर्यावरण, वनस्पति एवं खगोल ज्ञान . एक अनुशीलन

डॉ0 जमील अहमद

असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी0 जी0 कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

पुराणों का भारतीय वाङ्मय में विशिष्ट स्थान है। इन्हें भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का अजस्र स्रोत माना जाता है। पुराणों को यदि भारतीय संस्कृति का विश्वकोष कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुराणों के रचयिता लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। इन आदि एवं पावन ग्रन्थों का रचनाकाल ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी (गुप्तकाल) माना जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में पुराणों की रचना एक मुख्य उद्देश्य से की गयी थी। इसके पूर्व लिखे ग्रन्थों की भाषा अत्यन्त क्लिष्ट एवं जटिल थी, जिसे आम जन को समझने में कठिनाई आती थी। इसलिये इनको सरल एवं जनसाधारण की भाषा में लिखा गया ताकि इन्हें पढ़ने एवं समझने वाले लोग की संख्या सकारात्मक अनुपात में बढ़े। धर्म से अनुप्राणित होने के कारण प्राचीन काल में जितने भी ग्रन्थ लिखे गये सभी धार्मिक आग्रहों से जुड़े रहे। वस्तुतः उस समय के बुद्धिजीवियों के लिये जनता से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम धर्म था और इन्हीं धर्म ग्रन्थों के माध्यम से ही अन्य विविध विषयों की समुचित जानकारी भी जन सामान्य में प्रसरित की जाती थी।

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में पुराणों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पुराणों की संख्या 18 है तथा इसी प्रकार उप–पुराण की संख्या भी 18 ही हैं। पुराणों में मत्स्य, मार्कण्डेय, ब्राह्मण, वायु, अग्नि, विष्णु, शिव, भागवत, गरूण आदि तथा उप–पुराणों में सनतकुमार, नरसिम्हा, शिवरहस्य, दूर्वाषा, कपिल, वामन, भार्गव, वरूण, कालिका, साम्बा, नन्दी, सूर्या, परासर आदि प्रमुख हैं। अमरकोष में पुराणों के पाँच विषयों का उल्लेख मिलता है यथा सर्ग (संसार की सृष्टि), प्रतिसर्ग (पुनः संसार की सृष्टि), मनवन्तर (विविध मनुओं के काल), वंश (देवी–देवताओं के वंशावली), वंशानुचरित (शाही सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी शासकों की वंशावली)।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वान्तराणि च।

वंशानुचरितश्चैनं पुराणं पंचलक्षणम्।।

पुराणों से हमें चारों युगों यथा सत्य, द्वापर, त्रेता तथा कलयुग की अवधारणा का ज्ञान होता है। सभी युगों को हजार–हजार वर्षों में विभाजित किया गया है तथा इन चारों युगों को मिलाकर एक महायुग तथा हजार महायुग मिलाकर एक कल्प की संकल्पना की गयी है। युगों के चक्र तथा पुनः चक्र की बात कही गयी है और इनकी व्याख्या को माने तो सत्ययुग से कलयुग तक की यात्रा में निरन्तर धर्म का पतन होता है। पुराणों से पर्वत, पहाड़, नदी तथा स्थल आदि की सूचनायें प्रचुरता से मिलती हैं जो हमें तत्कालीन भौगोलिक स्थिति का ज्ञान कराती है। पुराणों में हमें ब्राह्मण धर्म की मान्यताओं के अलावा ब्राह्मणेत्तर मान्यताओं एवं परम्पराओं की सूचना मिलती है। ये पुराण ऐतिहासिक कालीन राजवंशों व

उसके शासकों के इतिहास जानने के भी अच्छे स्रोत हैं यथा मौर्यवंश के लिए विष्णु पुराण, सातवाहन एवं शुंग के लिए मत्स्य पुराण तथा गुप्त वंश के लिए वायु पुराण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अलावा यह कहना अनुचित न होगा कि पुराणों में हमारे अतीत के विविध पहलुओं एवं पक्षों के जीवन्त चित्रण अनेकत्र बिखरे पड़े हैं जिन्हें वैज्ञानिक एवं सारगर्भित ढंग से व्याख्यायित करने की आवश्यकता है।

पुराणों को केवल धार्मिक ग्रन्थ कहकर इनके अन्य विविध पक्ष को उपेक्षित करना बिल्कुल भी तर्क संगत नहीं है। पुराणों से हमें विविध प्रकार के ज्ञान–विज्ञान की सूचनायें प्राप्त होती हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, ऋतुओं, वनस्पतियों, जाड़ा, गर्मी, बरसात, दिन–रात, माह, प्रलय, भूकम्प, अतिवृष्टि एवं अलपवृष्टि, नदी, नाले, समुद्र, द्वीप आदि भौगोलिक, पर्यावरणीय, खगोल तथा वानस्पतिक ज्ञान के बारे में अनेकत्र उल्लेख मिलता है जिनका विवरण निम्न पुराणों यथा–मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, मार्कण्डेय पुराण स्कन्दपुराण, गरुड़ पुराण, वामन पुराण, भविष्य पुराण आदि में संदर्भित आख्यानों को अध्ययन का आधार बनाते हुए कर सकते हैं–

स्रोत एवं संक्षिप्त विवरण

पुराणों के नाम	आख्यान–संदर्भ	प्रमुख बिन्दु
मत्स्य पुराण, प्रथम खण्ड	सृष्टि–प्रकरण, श्लोक 31–37, पृ0 13	पृथ्वी की उत्पत्ति एवं भू–संरचनाओं का विकास
मत्स्य पुराण, प्रथम खण्ड	सरस्वती चरित्र, श्लोक 2–5, पृ0 21	तारा मंडल (ध्रुव एवं सप्त ऋषि)
मत्स्य पुराण, प्रथम खण्ड	सरस्वती चरित्र, श्लोक 14–22, पु0 24	मानव विकास, चतुष्पाद से द्विपाद तथा पादप तथा पशु जगत।
मत्स्य पुराण, प्रथम खण्ड	दक्ष प्रजापति से मैथुनी सृष्टि, श्लोक 1–5, पृ0 25–26	मैथुन योग एवं सन्तानोत्पत्ति
मत्स्य पुराण, द्वितीय खण्ड	नर्मदा महात्म्य श्लोक 8–14, 22–24, 50–63, पृ0 162–171	नदियों के नाम तथा इनके प्रवाह तंत्र एवं उद्‌गम का उल्लेख
मार्कण्डेय पुराण, द्वितीय खण्ड	भानुतन लेखन, श्लोक 65, पृ0 288, भानुतन लेखन, श्लोक 41–50, पृ0 288	ऋतुओं का कारण एवं प्राकृतिक आपदायें।
स्कन्द पुराण स्कन्दपुराण स्कन्दपुराण	ब्रह्मखण्ड–चार्तुमास महात्म्य 3. 2–4 वैष्णव खण्ड–कार्तिकमास महात्म्य, अध्याय–2 वैष्णवखण्ड–उत्कलखण्ड, पृ0 286	अन्नदान, वटवृक्ष, बेर

स्कन्दपुराण	वैष्णवखण्ड–बदरीमहात्म्य, 5,58	
गरुणपुराण	9.7	तुलसी
स्कन्दपुराण	9.11, 5.4.39, पृ0 2220	तिल, वटवृक्ष, इमली एवं चम्पा
भविष्य पुराण	ब्राह्मपर्थ, 66, 32–33, अध्याय 215, उ0पूर्व 92.7	दूब, नीम, केला
संक्षिप्त भविष्य पुराणांक	पृ0 87, 218 तथा 1010	पंच पल्लव (बरगद, पीपल, आम, गूलर पाकड़), वट अश्वाथ, धव, बिल्व, इन्द्रवली, कृष्ण शंखपुष्पी, अमृती, त्रपुष (खीरा), मालती, चम्पक, उर्वासक (ककड़ी) पारिभद्र (नीम), श्रीफल, बीजपुर, नारियल, दाडिम (अनार), धात्री, जम्बू फल, कमल, उत्पल, चमेली, बेला, जूही, दाल, सब्जी
वामन पुराण	43, 48	वट वृक्ष

मत्स्य पुराण के प्रथम खण्ड में सृष्टि–प्रकरण के श्लोक 31–37 में पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास के सिद्धान्त रूप मिलते हैं। इस आख्यान में सूर्य को अण्ड शब्द से संज्ञायित करते हुये उससे एक खण्ड के अलग होने का उल्लेख मिलता है जिससे पृथ्वी का निर्माण होता है। जो आधुनिक वैज्ञानिकों की 'बिग–बैग थ्योरी'' के समतुल्य है। निरन्तर वाष्पन एवं वर्षा के कारण शनैः–शनैः पृथ्वी के तापमान में कमी आई, जिससे पृथ्वी का वर्तमान स्वरूप बना जिनमें पहाड़, पर्वत, झील, झरने, तालाब, नदियां, सागर तथा आदि अन्य भू–संरचना का निर्माण हुआ। इसके साथ–साथ सात समुद्रों का नामोल्लेख यथा लवण सागर, इक्षु समुद्र तथा सुरा सागर आदि भी मिलता है। इनके अलावा इन समुद्रों के रत्नों से समन्वित होने का उल्लेख समुद्र के अंदर छिपी खनिज सम्पदा से समतुलनीय है।

इसी प्रकार मत्स्य पुराण के प्रथम खण्ड में सरस्वती चरित्र के श्लोक 2–5 के आख्यान में तारा एवं तारा मण्डल यथा ध्रुव तथा इसकी वंशावली एवं सप्तऋषि के बारे में उल्लेख दृष्टव्य होता है। मत्स्य पुराण के ही प्रथम खण्ड में सरस्वती चरित्र के श्लोक 17–22 में क्रमिक मानव विकास, चतुष्पाद से द्विपाद तथा पादप तथा पशु जगत आदि की पुष्टि श्लोकों के आख्यान से होती है। इसमें सभी को सोम तथा दक्ष के 80 करोड अंश बताया गया अर्थात यहाँ प्राकृतिक अनुकूलन को दिखाया गया है जो जीवों की अधिक उत्पाद एवं विकास हेतु उचित थें इनमें दोपाद, बहुपाद, वाली मुख–शकु कर्ण, रीछ मुख आदि का उल्लेख मिलता है। इनका यह विवरण आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित मानव विकास क्रम के सिद्धान्त यथा आस्ट्रेलोपिथिक्स, नियण्डरथल, होमोइरेक्टस, क्रोमैग्नान तथा होमोसेपियन्स सेपियन्स से समतुल्य है।

सन्तानोत्पत्ति तथा जनसंख्या वृद्धि के लिए मनुष्यों द्वारा मैथुन क्रिया का विवरण मत्स्य पुराण के प्रथम खण्ड में दक्ष प्रजापति से मैथुनी सृष्टि के श्लोक 1–5 में मिलता है। यहाँ पर मैथुन को योग की संज्ञा दी गयी है तथा सहस्त्र पुत्रों के जन्म का कारण बताया है।

इसी प्रकार मत्स्य पुराण के द्वितीय खण्ड में नर्मदा महात्म्य के श्लोक 8–14, 22–24, 50–63 के आख्यान में लिखा है कि नर्मदा समस्त सरिताओं में श्रेष्ठ है। गंगा कनखल में, यमुना कुरूक्षेत्र में, परन्तु नर्मदा ग्राम्य तथा अरण्य में सर्वत्र पुण्यमयी हैं। यमुना एवं गंगा को पापमोचक बताते हुये उल्लेख मिलता है कि यमुना के जल को पीने से एक सप्ताह में तथा गंगा के जल को पीने से तुरन्त ही पाप नष्ट होते हैं एवं नर्मदा जल के दर्शन मात्र से ही पाप धुल जाते हैं। इन आख्यान से इनके प्रवाह क्षेत्र तथा महत्ता एवं पवित्रता पर प्रकाश पड़ता है। उल्लेखित है कि ''यह उत्तम सरित् डेढ़ सौ योजनों के विस्तार वाली सुनी जाती है। हे राजेन्द्र ! यह दो योजन विस्तार से आयत है। सहस्त्र तीर्थ तथा साठ करोड़ तीर्थ उसके चारों और अमरकंटक में स्थित है।'' तीर्थ स्थलों के संदर्भ में अनेक नदियों का भी उल्लेख मिलता है। नर्मदा के दक्षिण तट पर कपिला नाम की एक महानदी है। विशल्या नामक एक अन्य पुण्य नदी का भी उल्लेख किया गया है।

पुराणों में खगोल ज्ञान के विषय में भी अनेकत्र सूचनायें संकलित हैं। मार्कण्डेय पुराण के भानुतल लेखन में श्लोक 41–50 में मार्कण्डेय जैमिनी के प्रश्नों के उत्तर में बताते हैं कि सूर्य के घूमने से समुद्र, पर्वत, वन, जलस्रोत, पृथ्वी आकाश अस्थिर होने लगे। उस समय चंद्रमा, ग्रह, तारागण, आदि के सहित संपूर्ण गगन–मंडल ही नीचे गिरता हुआ सा जान पड़ता है। समस्त सागर, नदी, जलाशयों के जल राशि में हलचल पैदा हो गई और महापर्वतों के शिखर बिखरने लगे। ध्रुव अपने स्थान से च्यूत होने लगा और इससे समस्त आकाशपिंडों की स्थिति उलटी–पुलटी होने लगी। वायु भी महा भयंकर वेग से चक्र काटने लगा और महामेघ घोर शब्द करने लगे। इसमें इन्होंने समस्त ऋतुओं का उत्पादक सूर्य को बताया है।

पुराणों में अनेक प्रकार के वृक्षों तथा वनस्पतियों का भी अनेकत्र वर्णन किया गया है तथा इसके माध्यम से विभिन्न भावनाओं का प्रकटीकरण किया गया है। भारतीय परम्परा में पेड़–पौधों की उत्पत्ति को देवताओं के अंगों से जोड़ा गया है। इस प्रकार प्रतीक रूप में ये वनस्पतियाँ सम्बन्धित देवता का प्रतिनिधित्व करती हैं। इससे वनस्पतियों के उद्भव सम्बन्धी कुछ तथ्य उद्भाषित होते हैं, जिनका आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों से सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुराणों से हमें धार्मिक ज्ञान के अलावा तत्कालीन पर्यावरणीय एवं भौगोलिक दशा, पेड–पौधे एवं वनस्पतियों, खगोल ज्ञान, मानव विकास आदि विविध पक्षों के बारे में विशद् ज्ञान प्राप्त होता है। प्राच्य महर्षि जलवायु के प्रलय व विनाशकारी पहलुओं व उसके कारण–निवारण से भी अवगत थे। पुराण प्राचीनकाल से गुप्तकाल तक के इतिहास से अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का परिचय कराते हैं। छठी शताब्दी ई0पू0 के पहले के प्राचीन भारतीय इतिहास के पुर्ननिर्माण के लिए तो पुराण ही एकमात्र स्रोत हैं। जहाँ पार्जिटर ने इन्हें भारतीय धर्म और संस्कृति का ज्ञानकोष कहा है वहीं कुमारिल ने पुराणों को विधि का उद्गम स्रोत माना है। पुराणों में संचित बहुउद्देशीय ज्ञान और विज्ञान की उपादेयता आज भी अति प्रासंगिक है।

संदर्भ–ग्रन्थ

1. शर्मा, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम आचार्य (सं0) 1970. ''सृष्टि–प्रकरण'', मत्स्य पुराण, प्रथम ख्ण्ड, :13, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब बरेली, (उत्तर प्रदेश)।
2. शर्मा, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम आचार्य (सं0) 1970. ''सरस्वती चरित्र'', मत्स्य पुराण, प्रथम ख्ण्ड, :21–24, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब बरेली, (उत्तर प्रदेश)।
3. शर्मा, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम आचार्य (सं0) 1970. ''दक्ष प्रजापति से मैथुनी सृष्टि'', मत्स्य पुराण, प्रथम ख्ण्ड, :25–26, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब बरेली, (उत्तर प्रदेश)।
4. शर्मा, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम आचार्य (सं0) 1970. ''नर्मदा महात्म्य'', मत्स्य पुराण, द्वितीय ख्ण्ड, :162–171, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब बरेली, (उत्तर प्रदेश)।
5. शर्मा, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं श्रीराम आचार्य (सं0) 1970. ''भानुतन लेखन'', मार्कण्डेय पुराण, द्वितीय ख्ण्ड, :288, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब बरेली, (उत्तर प्रदेश)।
6. गुप्त, आनन्द स्वरूप (सं0) 1977. वामन पुराण, सर्वभारतीय काशीराज न्यास, वाराणसी।
7. स्कन्द पुराणांक (संक्षिप्त) 1951. गीता प्रेस, गोरखपुर, जनवरी 1951।
8. भट्टाचार्य, जीवानन्द विद्यासागर 1890. गरुणपुराण, कलकत्ता।
9. भविष्य पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1992।
10. पाण्डेय, जय नारायण 1991. पुरातत्व विमर्श, विद्यासागर, इलाहाबाद।